अध्याय 32

याकूब और एसाव का पुनर्मिलन (भाग 1)

लाबान और याकूब के मध्य वाचा बांधने के बाद, लाबान और उसके लोग हारान की ओर लौट गए जबकि याकूब और उसका परिवार, अपने घर कनान की ओर निकल गया। शांति के साथ दोनों समूह एक दूसरे से विदा हुए; लेकिन याकूब को अपने भाई एसाव, जिसके क्रोध के भय से वर्षों पहले उसने घर छोड़ा था, का जल्द ही सामना करना था।

याकूब का घर वापसी की राह में स्वर्गदूत से मुठभेड़ (32:1, 2)

[1]और याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले। [2]उन को देखते ही याकूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है सो उसने उस स्थान का नाम महनैम रखा।

आयत 1. जब याकूब पहाड़ी प्रदेश गिलाद के दक्षिण की ओर, जो यर्दन नदी के पूर्व की ओर स्थित था यात्रा कर रहा था तो **परमेश्वर के दूत उसे आ मिला**। बीस वर्ष पूर्व जब वह एसाव के भय से भाग रहा था तो उसने स्वप्न में बेतेल नामक स्थान पर "परमेश्वर के स्वर्गदूतों" को देखा था; तब वे स्वर्ग से सीढ़ी के सहारे चढ़ते और उतरते थे (28:12)। इसलिए स्वर्गदूतों का प्रकट होना याकूब का हारान की यात्रा को रेखांकित करता है।

आयत 2. स्वर्गदूतों को देखकर, याकूब चिल्ला उठा, **यह तो परमेश्वर का दल है।**[1] स्वर्गदूतों के प्रगट होने के कारण कुलपति ने उस स्थान का नाम **महनैम** रखा, किंतु इसकी वास्तविक भौगोलिक स्थिति ज्ञात नहीं है।[2] नाम में क्या रखा है? "महनैम" इसके स्वरूप के अनुसार द्विभागीय है और इसका अर्थ "दो छावनी" है। "छावनी" מַחֲנֶה *(माहनेह)* का एकवचन रूप बहुधा सेना के संदर्भ में प्रयोग किया गया है (निर्गमन 14:24; न्यायियों 7:9-11; 1 इतिहास 12:22) और यहाँ पर इसका यही अर्थ निकलता है। जैसे याकूब और उसका दल, कनान की ओर बढ़ता है तो परमेश्वर के स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सेना (एक छावनी) का प्रगट होना, कुलपति और जो उसके साथ हैं (दूसरी छावनी) के लिए स्वर्गीय सुरक्षा

दर्शाता करता है।[3] परंतु याकूब यह जानता था कि एसाव जल्द ही अपने चार सौ लोगों के साथ आएगा (32:6) जो संभवतः उन दोनों भाइयों एंव उनके लोगों के मध्य युद्ध की स्थिति पैदा कर सकता था। दर्शन यह बताता है कि याकूब का दल, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सुरक्षा घेरे के अंदर ही था। इस ज्ञान ने कुलपति को आने वाले सक्रिय खतरे, जब वह और एसाव कई वर्षों के बाद मिलने वाले थे, से बचने के लिए उत्साहित किया।

एसाव से भेंट के लिए याकूब की तैयारी (32:3-8)

याकूब के संदेशवाहक (32:3-5)

[3]तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात एदोम देश में, अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए। [4]और उसने उन्हें यह आज्ञा दी, कि मेरे प्रभु एसाव से यों कहना; कि तेरा दास याकूब तुझ से यों कहता है, कि मैं लाबान के यहां परदेशी हो कर अब तक रहा; [5]और मेरे पास गाय-बैल, गदहे, भेड़-बकरियां और दास-दासियां है: सो मैं ने अपने प्रभु के पास इसलिए संदेशा भेजा है, कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो।

आयत 3. जिस घड़ी की **याकूब** ने कई वर्षों से आशंका जताई थी अंततः वह आ ही गईः उसका **अपने भाई** के साथ मुठभेड़। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि **एसाव** यह सोचे कि वह चुपके से घर आना चाहता है, उसने अपने आगे **सेईर देश में**, जिसका भौगोलिक नाम **एदोम** भी है, **दूत भेजे।** पुराने धोखे और चालाकी के कारण याकूब, एसाव के क्रोध से भय खाने लगा। व्यवस्थाविवरण 2:12 में वर्णित जानकारी के आधार पर कि उसका भाई उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार करेगा, भी कुलपति को सताने लगाः सेईर में होरी लोग बसे हुए थे, परन्तु ऐसावियों ने उन को उस देश से निकाल दिया। पाठ यह नहीं बताता है कि यह प्रक्रिया कब प्रारंभ हुई या कब समाप्त हुआ; फिर भी, यदि होरी लोगों का निष्कासन उन्हीं दिनों में हुआ हो तो याकूब ने इसके बारे में, जब वह मेसोपुतामिया से कनान की ओर अपने करावान के साथ यात्रा कर रहा था तो उसने इस संदर्भ में सुना होगा। होरी लोगों के निष्कासन ने याकूब को उसके भाई के सैनिक क्षमता के बारे में संदेश दे दिया होगा और इस बात ने उसे एसाव से भेंट करने में भयभीत किया होगा।

आयतें 4, 5. अपने भाई को प्रसन्न करने के उद्देश्य से कुलपति ने दूतों को यह आदेश दिया वे **एसाव** को याकूब का **स्वामी** कहें; उन्हें अपने स्वामी के विषय यह कहना था कि वह उसके बड़े भाई का **दास** है। इस प्रकार का अभिवादन यह दिखाता है कि **याकूब** शांतिपूर्ण मिलन चाहता था और आत्म समर्पण के द्वारा वह एसाव के प्रति किए गलती सुधारना चाहता था। याकूब की भाषा, इसहाक द्वारा दिए गए आशीर्वाद के विपरीत थी: "राज्य राज्य के लोग तेरे आधीन हों,

और देश देश के लोग तुझे दण्डवत करें: तू अपने भाइयों का स्वामी हो" (27:29)। यह इसहाक का एसाव को दिए वचन के विपरीत भी है: "अपने भाई के अधीन तो होए" (27:40)।

आगे, दूतों को एसाव को यह भी सूचित करना था कि याकूब, लाबान के संग लंबी अवधि तक रहने के बाद को परमेश्वर ने बहुतायत से **बैल और गधों**, अगिनत **भेड़ बकरियां** और कई **दास और दासियों** से आशीषित किया है, और अब कनान की ओर लौट रहा है। उसके बाद उन्हें यह कहना था कि वह यह आशा लगाए हुए है कि **वह उसकी कृपादृष्टि पाएं**। कृपादृष्टि के लिए חֵן *(हेन)* शब्द प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ अनुग्रह है।[4] याकूब अपने भाई से कठोर दण्ड जिसका वह भागी है के बजाय अनुग्रह, दया और शुभकामनाओं की अपील कर रहा था।

दूतों का डराने वाला संदेश (32:6-8)

[6]वे दूत याकूब के पास लौट के कहने लगे, हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरूष संग लिए हुए चला आता है। [7]तब याकूब निपट डर गया और संकट में पड़ा और यह सोच कर, अपने संग वालों के और भेड़-बकरियों और गाय-बैलों और ऊँटो के भी अलग अलग दो दल कर लिए, [8]कि यदि एसाव आकर पहिले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भाग कर बच जाएगा।

आयत 6. जिन दूतों को **याकूब** ने **एसाव** को सूचित करने के लिए भेजा था वे अपेक्षाकृत जल्द लौट आए। पाठ यह नहीं बताता है कि उनके मध्य क्या वार्तालाप हुआ; परंतु दूतों का संदेश अति डराने वाला था। उन्होंने उसे बताया कि एसाव आ रहा है और **चार सौ लोग उसके संग हैं**। याकूब ने सोचा कि उसकी योजना विफल हो गई है; उसके धन बल के वर्णन ने संभवतः एसाव पर विपरीत प्रभाव डाला होगा और उसको यह दांव महंगा पड़ गया होगा। याकूब यह बताना चाहता था कि उसका भाई यह जाने कि वह अब उसके सम्पत्ति का भागी नहीं होगा। 32:5 में वर्णित याकूब का धन यह दर्शाता है कि जो कुछ भी एसाव उससे मांगे वह उसे देने के लिए तैयार है। निश्चय, एसाव के पहलौठे का अधिकार और उसके पिता के द्वारा मृत्यु शय्या पर दिए आशीर्वाद को एसाव से धोखे और चालाकी से छीनने के लिए याकूब को भरपाई करनी थी।

आयतें 7, 8. दूतों के संदेश से **याकूब** शांति पाने की बजाय **निपट डर गया और संकट में पड़ गया**। चार सौ लोग एक बहुत बड़ी निजी सेना है[5] और एसाव इतनी बड़ी सेना इसलिए लाया होगा कि या तो वह याकूब के आदमियों द्वारा आक्रमण की अपेक्षा कर रहा था या फिर वह स्वंय उन पर चढ़ाई करने वाला था। वास्तव में जब याकूब अपने बड़े पशु धन और बड़ी संख्या में दासों के साथ कनान की ओर लौट रहा था तो उसके मन में क्या चल रहा था, एसाव को इसके

संबंध में कुछ भी पता नहीं था। याकूब के आदमियों को जानवरों और भेड़ों के दल को हांकना था और यदि आवश्यकता हुई तो उन्हें अपने स्वामी के आदेश पर युद्ध भी करना पड़ सकता था। कोई भी घटना होने की स्थिति में एसाव तैयार होकर आ रहा था।

उसके भाई का इतने ढेर सारे लोगों के साथ उसको मिलने की सूचना ने याकूब को निश्चय ही भयभीत किया होगा परंतु उसके भय ने उसको अपाहिज नहीं बनाया। वह हमेशा की तरह एक सफल योजना बनाने वाला था और अभी भी उसमें ये सारे गुण थे। इसलिए उसने एक योजना बनाई जिसमें उसने **उन लोगों को जो उसके साथ थे**, को अलग अलग दलों में बांटा और उसी तरह उसने **भेड़-बकरियों, जानवरों और ऊँटों को भी दो दल में बांटा**। उसका यह विचार था कि यदि एसाव ने एक दल पर आक्रमण किया तो दूसरे दल को बचने का अवसर मिलेगा। यहाँ "दल" के लिए इब्रानी शब्द *माहेनेह* प्रयोग किया गया है और यही शब्द 32:2 में "दल" के लिए भी प्रयोग किया गया हैः "उनको [स्वर्गदूतों] देखते ही याकूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है, ... ।"

परमेश्वर से याकूब की प्रार्थना (32:9-12)

9फिर याकूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से कहा, कि अपने देश और जन्म भूमि में लौट जा और मैं तेरी भलाई करूंगा: 10तू ने जो जो काम अपनी करूणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं कि मैं जो अपनी छड़ी ही ले कर इस यरदन नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूँ। 11मेरी विनती सुन कर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा: मैं तो उससे डरता हूँ, कहीं ऐसा ने हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़कों को भी मार डाले। 12तू ने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूँगा, और तेरे वंश को समुद्र की बालू के किनकों के समान बहुत करूँगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जो सकते।

आयत 9. मूलपाठ यह नहीं बताता है कि इससे पहले कभी **याकूब** ने इस प्रकार का विशेष प्रार्थना की होगी, लेकिन यह विश्वास करना कठिन है कि उसने ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं की। कुछ लोगों का मानना है यह उसकी प्रथम औपचारिक प्रार्थना है।[6] उसकी यह प्रार्थना यह दिखाती है कि कुलपति अब परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् संबंध स्थापित करने लग गया था और यह उसके लिए उसके भाई के साथ उचित संबंध स्थापित करने के लिए आवश्यक भी था। वह अपने **दादा अब्राहम के परमेश्वर**[7] और अपने **पिता इसहाक के परमेश्वर** का आह्वान करके प्रार्थना करता है। बीस वर्ष पूर्व यहोवा ने कुलपति पर अपने आपको इसी नाम से बेतेल में प्रकट किया था (28:13)।

हमेशा सौदा करने वाला याकूब ने परमेश्वर को दो बातें स्मरण दिलाईः

(1) **तू ने तो मुझ से कहा, कि अपने देश और जन्म भूमि में लौट जा।** और अब वह वही कर रहा था जिसके लिए यहोवा ने उसे करने के लिए आदेश दिया था। किंतु इस समय वह गंभीर समस्या का सामना कर रहा था जो उसकी ज़िंदगी को खतरे में डाल सकता था और उसको अपने जान से भी हाथ धोना पड़ सकता था। इसलिए, याकूब ने परमेश्वर से यह विनती की कि वह अपने प्रतिज्ञा के दूसरे भाग: (2) **मैं तेरी भलाई करूँगा** को पूरा करे। इस भाग का शाब्दिक इब्रानी अनुवाद "मैं तेरी भलाई करूँगा" (इसका हिंदी अनुवाद इब्रानी के निकटतम है) (देखें NRSV; NJB; ESV) है।

आयत 10. इसके बाद, याकूब ने अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख नम्र किया। उसने अपने धोखा धड़ी और कार्य के बारे में नहीं बोला, जिसने एसाव को उसे मार डालने के लिए उकसाया था। उसने यह स्वीकार किया कि वह परमेश्वर की **करूणा और सच्चाई ... और ऐसे कामों में से एक के भी योग्य तो नहीं है** जिसे उसने उसे कई वर्षों तक **दिखाई** थी। उसका पापांगीकार यह दर्शाता है कि इस समस्या के मध्य, उसके जीवन में आत्मिक परिवर्तन होने लग गया था। वह अपने आपको एसाव के हाथों में करने के लिए तैयार हो गया था और उसने यह भी स्वीकारा कि वह परमेश्वर के सम्मुख अयोग्य है। याकूब ने स्मरण किया कि बीस वर्ष पूर्व, जब उसने **यर्दन नदी पार की थी**, तब उसके हाथ में एक **छड़ी** के अलावा कुछ भी नहीं था; लेकिन अब जब वह कनान की ओर लौट रहा है तो उसके पास पत्नियाँ, बच्चे, दास-दासियां और ढेर सारी जानवर के **दो दल** हैं।

आयत 11. क्या परमेश्वर ने याकूब को इन वर्षों में जो आशीष दी थी, वह अब व्यर्थ हो जाएंगी? क्या याकूब को एसाव एंव उसके आदमियों के हाथ अपनी ज़िंदगी समेत सब कुछ खोना पड़ेगा? कुलपति की प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर उसे छुटकारा प्रदान करे। उसको लगा कि उसका **भाई** आकर उस पर और उसके परिवार के **बच्चों समेत माँ पर चढ़ाई करेगा**।

आयत 12. तब, जैसे कि परमेश्वर भूल गया होगा, कुलपति ने परमेश्वर को स्मरण दिलाया कि उसने उसे सर्वसम्पन्नता और उसका **वंश समुद्र की बालू के किनकों** के समान होगा, की प्रतिज्ञा दी है (28:14; देखें 13:16; 15:5; 22:17; 26:4)। याकूब ने यह माना और परमेश्वर को मनाने का प्रयास करने लगा कि सभी ईश्वरीय योजनाऐं जो अब्राहम के प्रतिज्ञा के आशीषों से जुड़ी है, वह एसाव और उसके लोगों के साथ होने वाली भेंट के कारण, खतरे में है। स्पष्टतया, पहली बार, उसने अपने आपको और अपने परिवार को बचाने में असहाय महसूस किया होगा।

याकूब का चतुर योजना (32:13-21)

[13]और उसने उस दिन की रात वहीं बिताई और जो कुछ उसके पास था उस में से अपने भाई एसाव की भेंट के लिए छांट छांट कर निकाला; [14]अर्थात दो सौ बकरियां और बीस बकरे और दो सौ भेड़ें और बीस मेढ़े, [15]और बच्चों समेत दूध

देने वाली तीस ऊंटनियां और चालीस गायें और दस बैल और बीस गदहियां और उनके दस बच्चे। 16इन को उसने झुण्ड झुण्ड करके, अपने दासों को सौंप कर उन से कहा, मेरे आगे बढ़ जाओ और झुण्डों के बीच बीच में अन्तर रखो। 17फिर उसने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, कि जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले और पूछने लगे, कि तू किस का दास है और कहां जाता है और ये जो तेरे आगे आगे हैं, सो किस के हैं? 18तब कहना, कि यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेंट के लिए तेरे पास भेजे गए हैं और वह आप भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है। 19और उसने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी, वरन उस सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी, कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उससे कहना। 20और यह भी कहना, कि तेरा दास याकूब हमारे पीछे पीछे आ रहा है। क्योंकि उसने यह सोचा, कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शान्त करके तब उसका दर्शन करूंगा; हो सकता है वह मुझ से प्रसन्न हो जाए। 21सो वह भेंट याकूब से पहिले पार उतर गई, और वह आप उस रात को छावनी में रहा।

आयत 13. याकूब ने उस स्थान में जिसका नाम उसने मनहैम रखा था, में बैचेनी भरी **रात बिताई**। वह जानता था कि ईश्वरीय छुटकारे के लिए प्रार्थना करना पर्याप्त नहीं था क्योंकि उसको अपने भाई की क्षतिपूर्ति भी करनी थी। याकूब ने एक योजना बनाई जिसमें एक शानदार **भेंट** (מִנְחָה, *मिनहाह)* शामिल था। यह शब्द पुराने नियम में कभी कभी शासकों द्वारा प्रजा पर लगाए गए कर के लिए भी प्रयोग किया गया है (2 शमूएल 8:2, 6; 2 राजा 17:4; होशे 10:6); लेकिन इसका प्रयोग स्वेक्षा दान के लिए भी प्रयोग किया गया है (4:3-5; 43:11, 15; न्यायियों 6:18; 1 राजा 10:25)। इस संदर्भ में *मिनहाह* **एसाव** द्वारा याकूब पर लगाए गए कर या भार नहीं है बल्कि यह तो कई जानवरों की एक बहुत बड़ी भेंट है। यह **अपने भाई** को दिए गए उपहार का एक हिस्सा है जो उसने कई वर्षों पूर्व चतुराई से उसके पहलौठे का अधिकार और पिता के मृत्य शय्या पर धोखे से प्राप्त किए गए आशीषों की भरपाई थी।

आयतें 14, 15. याकूब के उपहार में एसाव को देने के लिए जानवरों की संख्या लड़खड़ाने वाली हैः कुल 550 जानवर। इन जानवरों की संख्या और विविधतता इस बात की गवाही देता है कि याकूब का हारान प्रवास कितना लाभप्रद था।[8] सबसे पहले लेखक ने **दो सौ बकरियाँ और बीस बकरे** की सूची बनाई और इतने ही संख्या में भेड़ों की सूची भी लिखी गईः **दो सौ भेड़ें, और बीस मेढ़े** और उसके बाद **बच्चों समेत दूध देने वाली तीस ऊंटनियाँ और चालीस गायें और दस बैल**। और उसके बाद अंत में **बीस गदहियाँ और उनके दस बच्चे** भी सूची में शामिल किए गए। जानवरों के हर एक दल में नर और मादा जानवरों की बराबर संख्या रखी गई ताकि पशुधन की बढ़ोत्तरी उचित अनुपात में हो सके। याकूब का एसाव को देने के लिए पशुओं की जो संख्या है उससे यह विदित होता है कि उसको इस बात का एहसास हो गया था कि उसने एसाव के पहलौठे

का अधिकार और उसके पिता का मृत्यु शय्या पर धोखे से लिया गया आशीर्वाद से उसको (एसाव को) कितनी हानि हुई थी।

आयत 16. याकूब ने जानवरों के एक दल के बाद दूसरे दल को एसाव के सामने हांककर उसके क्रोध को शांत करने की योजना बनाई। उसने हर एक दल को हांकने की जिम्मेदारी **अपने दासों को सौंपी** और उसने उनको यह निर्देश दिया कि वे **हर एक दल के बीच उचित दूरी** बनाकर उसके आगे जाएं।

आयतें 17, 18. हर एक दल को उस मार्ग में जिस में एसाव चलने वाला था, पर अलग अलग स्थानों में पड़ाव डालना था। हर बार जब एसाव रूककर उन जानवरों के दल, दासों और उनके स्वामी के बारे में पूछताछ करे तो उनको एक ही उत्तर देना था, **यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेंट के लिए तेरे पास भेजे गए हैं।** उन्हें यह भी निर्देशित किया गया था कि वे एसाव को यह बताएं कि वह आप (याकूब) भी हमारे **पीछे पीछे आ रहा है**।

आयत 19. मूलपाठ यह नहीं बताता है कि याकूब ने मार्ग में कितने दास और **दल** ठहराए। यह केवल तीन दलों का विवरण देता है जो एक के पीछे एक चलने वाले थे और शेष दल इनका अनुसरण करने वाले थे।

आयत 20. इसके साथ ही याकूब ने हर एक दल के अगुवे को यह कहने के लिए कहा, **तेरा दास याकूब हमारे पीछे पीछे आ रहा है।** यह योजना एसाव के क्रोध को शांत करने के लिए बनाई गई कि ये सारे जानवरों का दल उसके भाई की ओर से उसके लिए उपहार है। "शांत करना" इब्रानी क्रिया כָּפַר *(कापर)* का अनुवाद है जिसका अर्थ "ढांकना" होता है। याकूब के विचारों का इस प्रकार भी अनुवाद किया जा सकता है, "मैं अपने उपहारों से उसके चेहरे को ढांक दूँगा।" बलिदान के संदर्भ में *कापर* का अर्थ, "प्रायश्चित करना," "मेल-मिलाप करना"[9] या "शांत करना"[10] हो सकता है। यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग "मनुष्य को शांत करने" के लिए प्रयोग किया गया है (देखें 2 शमूएल 21:3; नीति. 16:14)। याकूब ने यह सोचा कि जब वह एसाव को देखेगा तो उसके चेहरे पर क्रोध नहीं झलकेगा; और वह याकूब को शंतिपूर्ण तरीके से स्वीकार करेगा। **वह मुझे स्वीकार करेगा**, इब्रानी कहावत "वह मेरा चेहरा उठाएगा" का अनुवाद है।

आयत 21. जब दास जानवरों के दलों के साथ, जो एसाव के लिए भेंट स्वरूप अलग की गई थी, आगे बढ़े तो याकूब **अकेले उस रात को छावनी में ठहरा रहा।**

याकूब का स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध (32:22-32)

[22]उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों और दोनों लौंडियों और ग्यारहों लड़कों को संग ले कर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया। [23]और उसने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया वरन अपना सब कुछ पार उतार दिया। [24]और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरूष आकर पह फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। [25]जब उसने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब

उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। 26तब उसने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा। 27और उसने याकूब से पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने कहा याकूब। 28उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है। 29याकूब ने कहा, मैं विनती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता। उसने कहा, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया। 30तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान का नाम पनीएल रखा: कि परमेश्वर को आमने सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है। 31पनूएल के पास से चलते चलते सूर्य उदय हो गया और वह जांघ से लंगड़ाता था। 32इस्राएली जो पशुओं की जांघ की जोड़ वाले जंघानस को आज के दिन तक नहीं खाते, इसका कारण यही है, कि उस पुरूष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था।

आयतें 22, 23. याकूब ने अपने दासों के साथ एसाव से भेंट करने की तैयारी कर ली थी, परंतु 32:21 के अंतिम वाक्यांश में ऐसा लिखा हुआ है कि याकूब "उस रात को छावनी में अकेले रह गया।" जब उसने विश्राम करने का प्रयास किया होगा, तो बीस वर्ष के बाद अपने भाई का सामना करने की चिंता ने उसको आ घेरा और मानो अनिंद्रा रोग उसको लग गया जिसने उसके नींद को छीन लिया। मूल पाठ यह कहता है कि **उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों और दोनों लौंडियों और ग्यारहों लड़कों को संग ले कर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया**। यब्बोक, यर्दन नदी की एक सहायक नदी है जिसका उदगम् यर्दन घाटी में यर्दन नदी से लगभग पचास मील पश्चिम की ओर और मृत सागर से लगभग बीस मील उत्तर की ओर है।

याकूब के ग्यारह बच्चों का संदर्भ हमें असमंजस में डालता है क्योंकि अब तक याकूब के बारह बच्चे पैदा हो चुके थेः ग्यारह पुत्र और एक पुत्री, दीना (30:21)। जबकि यह सत्य है कि पुराने नियम में इब्रानी शब्द יְלָדִים *(येलादीन)* का सामान्य अर्थ "बच्चे" है किंतु यह पाठ केवल "पुत्रों" का ही अनुवाद करता है क्योंकि यहाँ दीना सम्मिलित नहीं की गई है[11] (देखें KJV; NKJV; NEB; REB; NIV; NCV; NLT)। उसको इस सूची से हटाने का संभावित कारण यह है कि याकूब को पहले 32:28 में "इस्राएल" नाम दिया गया जिस नाम से बाद में उसके बारह पुत्रों को एक राष्ट्र के रूप में संबोधित किया गया है। क्योंकि दीना का इस्राएल राष्ट्र के नींव डालने में कोई भूमिका नहीं है, तो लेखक ने उसको यहाँ पर सम्मिलित नहीं किया है[12] जबकि अध्याय 34 में उसका वर्णन किया गया है। फिर भी, वह याकूब के परिवार, दासों, पशु और जानवरों के दलों के साथ थी जब याकूब ने उन सबको यब्बोक नदी के पार भेजा था।

आयत 24. मूलपाठ यह नहीं बताता है कि याकूब ने अपने से **अलग** यब्बोक के उस पार अकेले ठहरने का निर्णय क्यों लिया। कुलपति के अलग रहने के लिए

कई सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं: कर्तव्य, भय, व्यक्तिगत् अवलोकन या फिर उस घड़ी की तैयारी में परमेश्वर के साथ एकांत समय बिताना, जिस घड़ी एसाव उससे भेंट करने को आने वाला था। याकूब का एकांत रहने का कुछ भी कारण क्यों न हो, इसका विशेष धर्मवैज्ञानिक उद्देश्य है। अंततः बिना किसी बहाने, छल, सम्पत्ति या फिर किसी प्रकार की सुरक्षा के बिना उसकी परमेश्वर से मुठभेड़ हो गई। परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाए तो याकूब का संघर्ष, जिससे उसे स्वंय लड़ना था, वास्तव में उसके अपने छल, धोखे और स्वार्थीपन के कारण था, न कि उसके भाई के विरूद्ध संघर्ष था। संभवतः इसी कारण **एक पुरूष** ने उस पर आक्रमण कर दिया और **भोर होने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा**। इस भावुक परिस्थिति के संबंध में स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न पूछा जाता हैः "यह रहस्यमय पुरूष कौन था?" 32:28 से पहले मूलपाठ इसकी पहचान नहीं करता है। यहाँ उसकी पहचान परमेश्वर के रूप में होता है। सैकड़ों वर्ष बाद, होशे ने उसकी पहचान परमेश्वर तथा स्वर्गदूत के रूप में की है (होशे 12:3, 4)। इस स्वर्गदूत ने कभी कभी परमेश्वर की तरह बोला, वह परमेश्वर के समान समझा गया और फिर भी वह मनुष्य के समान दिखाई दिया (16:7 की टिप्पणी देखें)।[13]

आयत 25. याकूब के दृष्टिकोण से लेखक ने इस अजीबोगरीब घटना का वर्णन जारी रखा; इसलिए, उसने लिखा कि अजनबी ने अचानक कुलपति पर हमला बोल दिया और परिणामस्वरूप एक उग्र संघर्ष प्रारंभ हो गया। जब तक कि उस पुरूष (स्वर्गदूत) ने यह नहीं समझा कि वह याकूब के विरूद्ध प्रबल नहीं हो रहा है, तब तक संघर्ष एक लंबी अवधित तक जारी रहा। स्वर्गदूत ने शर्तिया अपने आपको याकूब के साथ संघर्ष करने के लिए नम्र किया होगा, ताकि वह उसको न हरा सके। दूसरे मनुष्यों की तुलना में, याकूब कोई कमज़ोर व्यक्ति नहीं था। बीस वर्ष पूर्व उसने कुएं पर धरे एक बड़े पत्थर को लुढ़काने में अपनी बड़ी ताकत का परिचय दिया था, जिसको लुढ़काने के लिए आमतौर पर कई चरवाहों की आवश्यकता होती है (29:10)। जब स्वर्गदूत को लगा कि वह कुलपति को नहीं हरा सकता है तो उसने **उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई**। फिर भी मल्लयुद्ध जारी रहा क्योंकि याकूब ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया था।

आयत 26. जैसे समय बीतता गया, दोनों योद्धा थक गए। उसके बाद मल्लयुद्ध वाकयुद्ध में परिवर्तित हो गया। स्वर्गदूत ने याकूब को कहा, **मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है**। संभवतः वह नहीं चाहता था कि भोर की रोशनी उसका रहस्य खोले, लेकिन याकूब को यह पता चल गया था कि उसका विरोधी किसी प्रकार का ईश्वरीय प्राणी है। उसने अजनबी को उत्तर दिया, **जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा**। अंततः याकूब ने अपनी निराशाजनक स्थिति प्रकट कीः वह जानता था कि एसाव जल्द आने वाला है और इस बात की उसको कोई गारंटी नहीं थी कि वह स्वंय या उसके प्रिय जनों में से कोई भी उसके भाई के क्रोध से बच पाएगा।

आयत 27. जब स्वर्गदूत ने उससे पूछा, **तेरा नाम क्या है?** तो कुलपति ने

उत्तर दिया, **याकूब।** निश्चय यह ईश्वरीय प्राणी याकूब का नाम तथा उसके गुणों को जानता था। वह चाहता था कि याकूब स्वंय अपना नाम बताए क्योंकि वह नाम वास्तव में उसके चरित्र को प्रकट करता है; इस बात ने उसको अपने कपटपूर्ण अतीत की ओर झांकने के लिए मजबूर किया कि उसने अपने भाई से चतुराई और छलावा करके "धोखा" दिया था (27:36)। अपने पुराने नाम को स्वीकारने और इसके अपर्याप्त योग्यता ने उसे अपने नए नाम को प्राप्त करने के लिए तैयार किया।

आयत 28. स्वर्गदूत ने कुलपति को बताया कि **उसका नाम अब याकूब** [ऐड़ी पकड़ने वाला] **नहीं होगा** बल्कि अब उसका नाम **इस्राएल होगा** (देखें 25:26; 27:36)। हालांकि भाषाविदों ने इस्राएल शब्द का अर्थ निर्धारण नहीं किया है लेकिन KJV के अनुसार इसका अर्थ "परमेश्वर का राजकुमार" है। NIV अनुवाद में इस्राएल शब्द "वह परमेश्वर के साथ झगड़ा करता है" करके परिभाषित किया गया है। इब्रानी भाषा में इस शब्द का अर्थ या तो "परमेश्वर प्रबल हुआ" या "परमेश्वर सुरक्षित रखे"[14] हो सकता है लेकिन यह स्वर्गदूत द्वारा "इस्राएल" शब्द की परिभाषा: **तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है** प्रतिकूल है। इस्राएल का अर्थ विरोधाभासी हैः जब याकूब अपने आपको परमेश्वर के हाथ में सौंपता है और उसे अपने जीवन पर प्रबल होने देना चाहता है तभी वह अपने परिस्थिति पर प्रबल हो सकता है। अन्य बाइबल के अवतरणों में यह देखा गया है कि जब किसी का नाम परिवर्तित किया गया तो इस प्रक्रिया के द्वारा उस व्यक्ति के चरित्र तथा जीवन में भी परिवर्तन आता है (17:4, 5, 15, 16; गिनती 13:16; यूहन्ना 1:40-42)। यहाँ पर भी यही स्थिति होनी चाहिए थी। नाम परिवर्तन के द्वारा याकूब और उसके वंश में परमेश्वर की आशीष आई।

आयत 29. रहस्यमयी मल्लयुद्ध करने वाले के वक्तव्य ने याकूब को नई आत्मविश्वास दिया। यद्यपि वह सचमुच विजयी नहीं हुआ और न ही अपने स्वर्गदूत सरीखे विरोधी से हारा; परंतु अब वह उसे वाक युद्ध भी देने को तैयार था। उसने उससे निवेदन किया, **मैं विनती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता।** प्राचीनकाल में किसी व्यक्ति का नाम जानने का तात्पर्य उस व्यक्ति के जीवन के रहस्य को जानना होता था। अन्यजातियों में, यह ईश्वरीय प्राणी पर विजय प्राप्त करने जैसा था। संभवतः इसी कारण स्वर्गदूत ने याकूब के प्रश्न का प्रत्युत्तर नहीं दिया; बल्कि उसने यह पूछा, **तू मेरा नाम क्यों पूछता है?** (देखें न्यायियों 13:17, 18)। उसका प्रश्न दूसरे तरीके से याकूब से जानकारी प्राप्त करने के लिए भी समझा जा सकता है, "याकूब, क्या तू यह नहीं समझता है कि मैं कौन हूँ?"[15] कुलपति ने अपने विरोधी से और अधिक प्रश्न नहीं पूछे और लेखक के इस वक्तव्य के कि **उसने उसे वहाँ आशीष दी** के साथ वार्तालाप अचानक समाप्त हो जाता है। स्वर्गदूत ने याकूब को कौन सी आशीष दी उसके बारे में कुछ पता नहीं है।

आयत 30. इस मल्लयुद्ध के कारण याकूब ने **उस स्थान का नाम पनीएल रखा।** दूसरी आयतों में (अगली आयत में भी) इसका विघटित रूप पनूएल प्रयोग

किया गया है (32:31; न्यायियों 8:8, 9; 1 राजा 12:25)। दोनों शब्दों का अर्थ "परमेश्वर का मुँह" है लेकिन "पनिएल" इब्रानी पाठ में याकूब के विश्लेषण के निकट है।[16] उसने चिल्लाकर बोला, **परमेश्वर को आमने सामने देखने** [אֶל־פָּנִים פָּנִים, *पानीम एल पानीम]* **पर भी मेरा प्राण बच गया है** (16:13 का टिप्पणी देखें)। वास्तव में, कोई भी परमेश्वर को जैसा वह है वैसे नहीं देख सकता है, क्योंकि ऐसा होने से मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है (निर्गमन 33:20)। यूहन्ना 1:18 कहता है कि, "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा है" (देखें 1 तीमु. 6:16; 1 यूहन्ना 4:12)। वह मनुष्य से अदृष्य है (कुलु. 1:15)। होशे ने कहा कि वास्तव में याकूब का मल्लयुद्ध परमेश्वर से नहीं बल्कि उसके स्वर्गदूत से था (होशे 12:3, 4)। होशे का यह अवलोकन परमेश्वर का कुलपतियों पर अपने आपको प्रगट करने के समरूप है (देखें 17:1-22; 22:11, 15; 28:12, 13; 31:11-13)। जिस तरह यहाँ पर याकूब के साथ हुआ वैसे ही उन्होंने भी परमेश्वर के विभिन्न अभिव्यक्तियों को देखा या अनुभव किया और वे जीवित रहे।

आयत 31. जब **सूर्य उदय** हुआ और नई दिन की शुरूआत हुई तो इसका अर्थ समय के गुज़रने से बढ़कर समझा जाना चाहिए। यह याकूब के जीवन में नव युग का प्रारंभ था। उसने **जांघ से लंगड़ाते हुए पनूएल छोड़ा**। कुलपति कुचला गया परंतु एक नए नाम और आशीर्वाद के साथ उसका उदय हुआ। उसका लंगड़ाना उस पर परमेश्वर के न्याय को दिखाता है लेकिन उसका नया नाम इस बात का प्रमाण है कि वह अब परमेश्वर के साथ एक नए व्यक्ति के रूप में खड़ा है। याकूब के जीवन में एक बड़ा फेर बदल हुआ। वह इसलिए प्रबल हुआ क्योंकि उसने परमेश्वर को अपने जीवन में प्रबल होने दिया। उसका लंगड़ाना उसके शरीर में परमेश्वर का चिह्न बना और यह उसको यह स्मरण दिलाता रहेगा कि वह अपने आप में पर्याप्त नहीं है।

आयत 32. याकूब जानता था कि उसे अपने व्यहवहार करने का तरीका भी बदलना है और याकूब के इस अनुभव ने उसके संतानों में आहार संबंधी बातों में भी परिवर्तन लाया। याकूब का परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध के संस्मरण में, जब **इस्राएल के संतानों** ने मांसाहार किया, तो **इस्राएली जो पशुओं की जांघ की जोड़ वाले जंघानस** ["स्नायु"[17] या "नितम्ब"[18]] **को आज के दिन तक नहीं खाते, इसका कारण यही है, कि उस पुरूष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था**। परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित लेखक ने लिखा कि यह प्रथा लेखक के समय में भी प्रचलित थी (**आज दिन तक**)।[19]

याकूब को परमेश्वर के सामर्थ और ज्ञान का एक बार फिर स्मरण दिलाया गया है। इसलिए, उस स्थान को उसने अपने भरोसे का नवीनीकरण के साथ, यहोवा की सुरक्षा और संरक्षण और उस ईश्वरीय प्रतिज्ञा जो परमेश्वर ने उसको और उसकी संतानों को आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा की थी, के साथ छोड़ा। इस अनुभव के साथ याकूब आगे बढ़ने के लिए तैयार था और जब वह एसाव का सामना करे तो अपने साहस और नम्रता का परिचय दे और अपने भाई से टूटे संबंध को जोड़ने का प्रयास करे।

अनुप्रयोग

याकूब का मनपरिवर्तन (अध्याय 32)

उत्पत्ति अध्याय 32 का ध्यानपूर्वक अध्ययन याकूब के मनपरिवर्तन में अन्तर्दृष्टि को प्रदान करता है, ज्यों ज्यों वह परमेश्वर के जन के रूप में विकसित होता जाता है। इस प्रक्रिया में चार कदम थे।

पहला कदम। परमेश्वर की उपस्थिति। याकूब के मनपरिवर्तन में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति उसके दूतों के व्यक्तित्व में जागरूक होना शामिल है (32:1, 2)। बीस वर्ष पहले, याकूब अपने भाई के क्रोध से भागकर अपने मामा के घर शरण पाई थी। इस समय वह अपनी पत्नियों, बच्चों, सेवकों, भेड़-बकरियों के झुण्ड और जानवरों के साथ लाबान के क्रोध से भाग रहा था। वह जानता था कि कनान देश को वापिस जाने का अर्थ है अपने भाई का फिर से सामना करना, जिसने उसे जान से मारने की धमकी थी। याकूब जानता था कि उसे अपने अतीत के पापों की कीमत चुकानी होगी, और वह एसाव के बदले से उसका डर उचित ही था। परन्तु, परमेश्वर कुलपति के हृदय की परेशानी को जानता था। जैसा 28:12-15 में उसने बेतेल में किया था, परमेश्वर ने याकूब को अपने दूत दिखाए। इस भेंट में परमेश्वर की उपस्थिति ने उसे बड़ा आत्मविश्वास दिया होगा। एक भाव में, परमेश्वर के दूतों के दर्शन ने याकूब के मनपरिवर्तन के आरम्भिक चरण को चिन्हित किया। हालांकि उसने "यदि ... तो" करते हुए परमेश्वर के साथ मोलभाव करने का प्रयास किया (28:20-22)।

इस समय उसने, सीढ़ी के शिखर पर स्वर्ग की ओर दूतों को चढ़ते और उतरते नहीं देखा। इसके बजाय, उसने दूतों के एक "दल" को देखा। शब्द दल ने अक्सर सेना के दल या छावनी को दर्शाया है (निर्गमन 14:24; न्यायियों 7:9-11)। वास्तव में, वाक्य "परमेश्वर का दल" מַחֲנֵה אֱלֹהִים *(मचानेह एलोहीम)* या "परमेश्वर की छावनी" (NIV), यहाँ और पुराना नियम में एक अन्य स्थान पर सेना के संदर्भ में पाया जाता है। 1 इतिहास 12:22 में, इसे "परमेश्वर की सेना" के रूप में अनुवाद किया गया है। यह दाऊद की सेना का उल्लेख करता है, जबकि उत्पत्ति 32:2 स्वर्गिक दूतों की सेना का उल्लेख करता है।

परमेश्वर की उपस्थिति के दूतों के प्रकटीकरण कुलपति के विश्वास के लिए महत्वपूर्ण थे और बाइबल काल में अन्य कुछ व्यक्तियों के लिए। पहली शताब्दी में, इब्रानियों की पत्री का लेखक पुष्टि करता है कि सेवा टहल करने वाली आत्माएँ परमेश्वर के लोगों की सेवा करने को समर्पित होती हैं (इब्रा. 1:14; 13:2), जैसा उन्होंने अब्राहम और लूत के साथ किया (18:1-3; 19:1, 2)। आज हमें परमेश्वर के अनन्त प्रकटीकरण यीशु मसीह की उपस्थिति पर निर्भर रहना चाहिए।

अन्तिम भोजन की रात, ज्योंही यीशु के जाने का समय नज़दीक आ रहा था (यूहन्ना 14:1-3), शिष्य परेशान थे और उनके स्थिर रहने के लिए परमेश्वर की

उपस्थिति के आश्वासन की ज़रूरत थी। फिलिप्पुस ने उनकी तत्पर इच्छा को प्रकट कियाः "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा देः यही हमारे लिए बहुत है।" इस पर यीशु ने उस से कहा; "हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? *जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा हैः तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा"* (यूहन्ना 8, 9; बलाघात जोड़े गए हैं)। यीशु ने परमेश्वर पर एक मानवीय चेहरे को लगाया ताकि सभी लोग जान सकें कि वह इम्मानुएल है, "परमेश्वर हमारे साथ" (मत्ती 1:23)। उसके पुनरुत्थान के बाद और स्वर्गारोहण से पहले, यीशु ने अपने शिष्यों को महान आदेश दिया। इसमें प्रचार करने और सारी जातियों को चेला बनाने का आदेश जोड़ा गया है और यह इस प्रतिज्ञा के साथ समाप्त किया गया हैः "देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:19, 20)। इसलिए, यह मात्र दूतों की ही सेवा नहीं है जो हमें जीवन की कठिनाइयों में सम्भालते हैं, यह (हम में) मसीह में महिमा की आशा" है (कुलु. 1:27)। हम जानते हैं कि वह हमें बना रहा रहता है "उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है" (1 यूहन्ना 3:24; देखें 4:13)।

दूसरा कदमः याकूब के असफल प्रयासः याकूब के मनपरिवर्तन में एसाव, जिसके विरुद्ध उसने पाप किया था उसके साथ सम्बन्ध सही करने के प्रयास में अधूरा मन शामिल है (32:3-8)। झूठ और धोखेबाज़ी जो उसने अपने पिता और भाई के साथ बहुत पहले की थी परमेश्वर के द्वारा उसे क्षमा मिल गई थी परन्तु न समय और न ही दूरी उसके कार्यों के परिणामों को हटा सकी थी। ज्यों ज्यों वह दक्षिण दिशा कनान देश की ओर बढ़ रहा था, कुलपति जानता था कि उसे आखिरकार एसाव का सामना करना ही पड़ेगा। याकूब ने अपने कार्यों को पहचाना जिन्होंने एसाव की आत्मा को गहराई तक छेद दिया था, उसके कारण से हुए घाव उनमें अभी भी टीस होगी। इसकी कोई परवाह नहीं कि उसे अपना घर छोड़े हुए कितना समय बीत गया है, कुलपति को भय था कि हो न हो एसाव उससे और उसके परिवार से बदला लेने के अवसर की ताक में होगा।

इस तरह की विपत्ति को टालने के लिए, कुलपति ने संदेश के साथ अपने कुछ सेवकों को एसाव के पास भेजा। उनको एसाव को "प्रभु" कहकर सम्बोधन करना था और याकूब को एसाव के "दास" के रूप में प्रस्तुत करना था। यह इसहाक की याकूब को दी गई आशीष के विपरीत था, उसे एसाव पर स्वामी बनाने का (27:29)। बीस वर्षों के बाद, याकूब ने सम्भवतः समझ लिया था कि उसके पिता की मृत्यु हो गई होगी।[20] यदि यह सच होता तो एसाव सारी विरासत को पहले ही पा गया होता क्योंकि याकूब की स्थिति और स्थान अज्ञात थे। कुलपति ने अपने सेवकों को निर्देश दिया कि वे उनके स्वामी के पशुओं और भेड़ बकरियों के साथ ही साथ दास-दासियों के विषय में भी कहें एसाव पर इस बात की पुष्टि करने के लिए कि वह उससे कुछ भी लेने का प्रयास नहीं करता। याकूब अपने भाई को यह समझाना चाहता था कि उसकी चालबाज़ी और धोखे का अन्त हो गया और वह एसाव की सम्पत्ति से कुछ भी लेने का प्रयास नहीं करेगा। इस तरह से, याकूब ने अपने भाई के सामने दीन होने का प्रयास किया

और उसकी "कृपा" חֵן *(चेन)* को पाने की आशा की।

जब संदेशवाहक अपने स्वामी के पास वापिस आए, उन्होंने उसके भयानक भय की पुष्टि कीः एसाव अपने चार सौ पुरुषों के दल के साथ नज़दीक आ रहा था (32:6) जिनमें याकूब और उसके घेरे को तहस नहस करने की क्षमता थी। इन दो भाइयों के बीच में भरोसा नहीं रह गया था। हो सकता है यह विश्वास दिलाने के लिए उसका भाई वास्तव में बदल गया है एसाव को चकमा दिया गया हो। याकूब ने अपने किए हुए कामों की क्षमा नहीं मांगी, न ही उसका दुख प्रकट किया या अपने बड़े भाई की कोई क्षतिपूर्ति की हो। एसाव और उसके पुरुष उसकी ओर लगातार बढ़ रहे थे। याकूब और उसके परिवार के लिए यह कितना दुखदभरा आमना सामना होगा।

सम्पूर्ण बाइबल में, परमेश्वर के लोगों के सीखने के लिए सबसे कठिन शिक्षा यह थी कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों से बोले गए झूठ और किए गए धोखे को सहन नहीं करना (लैव्य. 19:33-37)। इस तरह के सभी कार्य लोभी हृदय से उत्पन्न होते हैं और चोरी का एक रूप हैं (निर्गमन 20:15, 17; आमोस 2:6; 5:11, 12)। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर की आराधना करने से पहले, वह व्यक्ति जिसे याद आता है कि एक भाई के मन में उसके प्रति कुछ विरोध है तो उसे पहले उसके पास जाना चाहिए और अपने भाई से मेल करना चाहिए; तब वह परमेश्वर को ग्रहणयोग्य आराधना की भेंट चढ़ा सकता है (मत्ती 5:23, 24)। एसाव जानता था कि उसके भाई ने अपनी विरासत से अधिक भाग लेने के लिए और उसकी मृत्युशैया की आशीष दोनों को धोखे से चुरा लिया है। क्योंकि अब तक याकूब ने सच्चे पश्चाताप को नहीं दर्शाया था, एसाव ने अपनी "कृपा" दर्शाने से इनकार नहीं किया था (32:5)। याकूब का एसाव के लिए संदेश पर्याप्त नहीं था; उसने उपहार भेजे, परन्तु उसने अपने भाई के साथ जो गलत किया उसे सही करने का इरादा नहीं प्रकट किया। परमेश्वर का जन बनने के लिए याकूब के मनपरिवर्तन यह एक ज़रुरी भाग था। उसे वही सीखना था जैसे हम सबको कि "विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।" (नीति. 13:15; KJV)। जो व्यक्ति परमेश्वर के साथ सही होना चाहता है उसे अपने संगीसाथी के साथ सही होने का प्रयास करना है।

तीसरा कदमः निर्णय और प्रार्थनाः याकूब के मनपरिवर्तन में परमेश्वर से बेधड़क प्रार्थना और एसाव के साथ सम्बन्ध सही करना इसकी कोई परवाह नहीं कि कैसी भी कीमत चुकानी पड़े शामिल हैं (32:9-21)। जब याकूब का अपने भाई की कृपा को लेने का पहला प्रयास विफल रहा तो वह परमेश्वर की ओर मुड़ा। उत्पत्ति के बाइबल अंश के अनुसार, कुलपति की परमेश्वर (यहोवा से) से यह पहली सच्ची प्रार्थना थी, उसके पुरखों अब्राहम और इसहाक का परमेश्वर। उसने परमेश्वर को स्मरण करवाया कि उसने उससे कहा था कि वह अपने देश और अपने लोगों में वापिस आएगा और उसे समृद्ध करने की प्रतिज्ञा दी थी (32:9)। समृद्धि के बजाय, हो सकता है अब वह सब कुछ खो दे अर्थात अपनी पत्नियों को, बच्चों को, दास-दासियों को, सम्पत्ति को और यहाँ तक अपने प्राणों

अर्थात एसाव के प्रचण्ड क्रोध से। याकूब, पुराने समयों से अब तक के विश्वासियों की तरह, परमेश्वर को बौद्धिक रूप से जानता था परन्तु अपने हृदय और अपने जीवन को कभी भी उसे समर्पित नहीं किया था। उसको उस खतरे की घड़ी से बचने का कोई उपाय नहीं दिखाई दिया। याकूब अपने पापों के प्रति "चुप हो गया" था और विश्वास के प्रति "चुप हो गया" था बचाव के लिए मात्र परमेश्वर में ही एक सम्भव उपाय था (देखें गला. 3:22, 23)।

कोई विकल्प नहीं था, याकूब ने स्वयं को परमेश्वर की दया पर छोड़ दिया। उसने कहा, "तू ने जो जो काम अपनी करुणा [חֶסֶד, *चेसड*, 'दृढ़ प्रेम'] और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं ... तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं ... मेरी विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा: मैं तो उस से डरता हूं ..." (32:10, 11)। याकूब ने स्मरण किया कि बीस वर्ष पहले एसाव के क्रोध से भागते समय, झूठ और छल के द्वारा एसाव की आशीषों को पाने की बजाय उसे कुछ नहीं मिला परन्तु उसके हाथ में एक लाठी ही थी। अब वह अपनी पत्नियों, बच्चों और दास-दासियों, इसके अतिरिक्त जानवरों के बड़े झुण्ड के बड़े घेरे के साथ वापिस आ रहा था (32:5)। उसने एसाव और उसकी सेना से छुटकारे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। एक बार फिर मानों परमेश्वर भूल गया हो उसने समृद्धि की आशीषों और वंशज की गिनती के विषय सब बातें परमेश्वर को स्मरण दिलाई (32:12)।

शब्दों और योजनाओं का कोई लाभ नहीं होगा; याकूब को एसाव के इतने वर्षों के क्रोध को शान्त करने के लिए अपनी कुछ सम्पत्ति का भाग क्षतिपूर्ति के रूप में देना होगा। इसलिए, याकूब ने एसाव को उपहार के रूप में देने के लिए 550 अच्छे पशु और उनको अलग अलग झुण्डों में बांट दिया। उसने उन्हें आगे भेजा, प्रत्येक झुण्ड में कुछ दूरी के साथ, अपने उपहारों के द्वारा भाई को प्रभावित करने के लिए। प्रत्येक चरवाहे को एसाव को एक ही कथन कहना थाः "यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेंट के लिए तेरे पास भेजे गए हैं, और वह आप भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है।" (32:18)।

कुछ समीक्षक याकूब के इस तरह एसाव को रिश्वत देने के प्रयास की आलोचना करते हैं। चाहे कुलपति ने अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की थी, वे फिर भी एसाव के क्रोध से बचने के लिए उसे षड्यंत्रकारी के रूप में ही देखते हैं। याकूब पर इस तरह का आरोप लगाना तो बहुत ही निष्ठुरता होगी, क्योंकि वह वही कर रहा था जिसकी परमेश्वर ने उससे आशा की थी अर्थात सच्चे पछतावे को प्रकट कर रहा था। वह स्वयं को एसाव के सामने दीन कर रहा था और पशुओं के उदारचरित उपहार और भेड़ बकरियों के झुण्ड भेज रहा था क्षतिपूर्ति के रूप में जो उसने पहलौठे के अधिकार एक दाल की कटोरी के बदले में धोखे से ले लिया था उससे अधिक भाग भेज रहा था। इसके बजाय अपने विश्वास को अमान्य ठहराने के स्थान पर याकूब के कार्यों ने वास्तव में ही इसे प्रदर्शित किया (देखें याकूब 2:20)। परन्तु उसे अभी भी और अधिक परमेश्वर से पुष्टिकरण की ज़रूरत थी कि एसाव शान्त हो जाए।

चौथा कदम। संघर्ष और संकल्प। याकूब के मनपरिवर्तन में परमेश्वर के दूत के साथ शारीरिक और आत्मिक मल्लयुद्ध शामिल है (32:22-32)। याकूब ने अपने बच्चों के साथ अपनी पत्नियों को लिया और घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया। तब उसने अपने सारे दासों को पशुओं के साथ नदी के पार भेज दिया और परन्तु आप अन्धेरे में अकेला रह गया। दरअसल वह अकेला नहीं था क्योंकि परमेश्वर का एक दूत अचानक ही मनुष्य के रूप में उसके सम्मुख आ प्रकट हुआ और वह कुलपति के साथ मल्लयुद्ध करने लगा। इस शारीरिक मल्लयुद्ध का मुकाबला सुबह होने तक होता रहा यह याकूब के आत्मिक संघर्षों का एक विस्तार था।

अपनी माता के गर्भ में याकूब और एसाव मल्लयुद्ध करते थे (25:22); और उसने अपने भाई की ऐढ़ी को पकड़ा और रोक लिया था (25:26)। बाद में, याकूब ने एसाव की भूख का लाभ उठाया और एक दाल की कटोरी के बदले में उसके पहलौठे के अधिकार को खरीद लिया था (25:27-34)। आखिरकार, उसने अपने दृष्टिहीन पिता को उसकी मृत्युशैय्या पर घोषित होने वाली आशीष को धोखा देकर अपने ऊपर ले ली जो पारम्परिक रूप से पहलौठे पुत्र को दी जाती थी (27:1-41)। अपने भाई के क्रोध से बचने के लिए, उसे हारान की ओर भागना पड़ा, जहाँ उसने लाबान, अपने बेईमान ससुर के साथ टकराव में बीस वर्ष व्यतीत किए। जब याकूब भय से मल्लयुद्ध कर रहा था; उसने सोचा एसाव उसके परिवार का नाश कर देगा और जो कुछ उसने अपने जीवन भर अर्जित किया है वह सब ले लेगा। क्या परमेश्वर ने बेतेल में उसके साथ प्रतिज्ञा नहीं की थी कि वह उसके और उसके परिवार के साथ रहेगा और उन्हें कनान में सुरक्षित वापिस लाएगा? क्या परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक की प्रतिज्ञा कि धरती के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे की प्रतिज्ञा को उसने याकूब पर फिर से उच्चारित नहीं की थी (28:12-15)? हाँ, की थी।

तब क्यों याकूब का सम्पूर्ण जीवन इस समय तक इतने शारीरिक संघर्षों के द्वारा चित्रित किया गया? उसके सम्पूर्ण जीवन में, याकूब ने परमेश्वर और अपने विश्वास के साथ आत्मिक संघर्ष किया। वह उस कहानी को जानता था परमेश्वर कैसे अब्राहम को ऊर से निकालकर लाया और उसे आशीषित किया और वृद्धावस्था में सारा ने उसके लिए पुत्र (इसहाक) को जन्म दिया। उसने स्पष्ट रूप से अपनी माता से सीखा होगा कि वह और उसका वंश एसाव के वंश पर अधिक सामर्थी होगा (25:23)। उसकी माता ही थी जिसने उसको अपने बड़े पुत्र का अधिकार छीनने के लिए उसको उत्साहित किया और वृद्ध पिता के साथ धोखा करके उसकी मृत्युशैय्या पर एसाव के बदले उसको आशीष लेने के लिए भेजा जिसके के लिए इसहाक ने इरादा किया था (27:6-17)। याकूब हो सकता है अपने मानसिक विश्वास के साथ पाला पोसा गया था, परन्तु उसके अन्दर हृदयी विश्वास (वास्तविक भरोसा) नहीं था। उसने वास्तव में अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों में नहीं सौंपा था। क्योंकि उसके प्रार्थना करने के विषय हम कोई विवरण नहीं पाते हैं जब कि याकूब ने यह सुना कि एसाव आ रहा है, हमें इस

बात से समापन करना है कि यह कुलपति प्रार्थना करने वाला व्यक्ति नहीं था। उसने हमेशा ही स्वयं को इस विचार में फँसा लिया कि अपनी समस्याओं को अपनी योजनाओं, चलाकियों और कठिन परिश्रम से हल कर लेगा।

भौतिक दृष्टिकोण से, बेतेल में की गई परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी। याकूब एक धनी मनुष्य था। परन्तु परमेश्वर की आशीष पत्नियों, बच्चों, दास-दासियों, भेड़-बकरियों और पशुओं से बढ़कर थी। वह समय आ गया था कि याकूब को जीवन की एक अन्य महत्वपूर्ण सच्चाई के साथ मल्लयुद्ध करना था।

पद 32:24 में विरोधी को दिव्य प्राणी के रूप में एक बलवान व्यक्ति दर्शाया गया, जबकि याकूब ने एक बार शारीरिक बल दिखाया था (29:10), परन्तु वह आत्मिक रूप से निर्बल था। इस संदर्भ में दो मल्लयुद्ध के मुकाबले हो रहे थेः एक बाहर और एक अन्दर। जबकि बाहर का मल्लयुद्ध मुकाबला यहाँ आरम्भ हुआ, कुलपति का आंतरिक संघर्ष उसके अधिकांश जीवन भर चलता रहा। याकूब एक निर्णय की स्थिति में पहुँच गया था। उसको यह समझने के लिए बहुत वर्ष लगे कि न ही उसके नियन्त्रण में था और न ही वह आत्मनिर्भर था।

याकूब को स्वयं के साथ निष्ठावान होने की ज़रूरत थी। एक अनैतिक, पापी मनुष्य के लिए इस बात को स्वीकार करना अति कठिन कार्य है। सम्भवतः दूत के याकूब से यह पूछने का उद्देश्य यही था, "तुम्हारा नाम क्या है?" (32:27)। यह पूछताछ उससे पूछने का एक तरीका था कि क्या वह अपने नाम के अर्थ के साथ ही जीवन जीना जारी रखेगा अर्थात चालबाज़ और धोखेबाज़, यहाँ तक स्वयं से भी धोखा करने वाला। विकल्प यह था कि वह जो था उसे स्वीकार करना था, परमेश्वर के हाथों में स्वयं को सौंपना था और परमेश्वर के द्वारा एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए स्वयं को तैयार करना था जिसकी भावी पीढ़ी को सारे संसार के लिए आशीष बनना था।

पवित्रशास्त्र में, नये नाम को प्राप्त करना एक नये आरम्भ और नयी मंजिल को प्रस्तुत करना था (17:4, 5, 15, 16; गिनती 13:16; यूहन्ना 1:40-42)। कुलपति को परमेश्वर ने नया नाम दिया था "इस्राएल।" नये नाम के अर्थ को समझना कठिन है क्योंकि यह या तो याकूब का उल्लेख करता है या फिर वह जिसने परमेश्वर के साथ संघर्ष किया या परमेश्वर के लिए जो याकूब पर "प्रबल" हुआ। यह असत्य सा लगता है क्योंकि याकूब तभी प्रबल हुआ जब वह स्वयं को परमेश्वर के हाथ में सौंपने के लिए और उसे अपने जीवन पर प्रबल होने के लिए तैयार हुआ। याकूब शारीरिक युद्ध हार गया जब दूत ने उसकी जांघ की हड्डी को हिला दिया और उसे लंगड़ाता हुआ भेजा, परन्तु वह आत्मिक जीत को जीत गया और विश्वास के नायकों में से एक बन गया (इब्रा. 11:21)।

निष्कर्ष। याकूब के द्वारा मन परिवर्तन की प्रक्रिया का अनुभव आज के प्रभावशाली मसीही जीवन का भेद है। उदाहरण के लिए, तारसुस का शाऊल उसने यीशु के नाम का अपयश फैलाने के लिए और उसके अनुयायियों को नाश करने के लिए जितना वह कर सकता था उतना उसने किया; परन्तु जब वह दमिश्क की राह पर यीशु से मिला जैसे याकूब लंगड़ा हो गया था, शाऊल तीन

दिन के लिए देख न सका; फिर भी उस विनम्र हार के द्वारा, वह अंत में विजयी बन गया। याकूब की तरह, उसने अधीनता स्वीकार करने के द्वारा अपनी विजय प्राप्त की। दमिश्क के नगर में, उसके पास हनन्याह आया जिसने उसकी दृष्टि को लौटाया (देखें प्रेरितों. 9:12) और उससे कहा,

> हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है, कि तू उस की इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उस की ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और सुनी हैं। अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। (प्रेरितों. 22:14-16)।

शाऊल ने देरी नहीं की, परन्तु उसी घड़ी परमेश्वर से आए इस संदेश का पालन किया। इस अनुभव के बाद उसे एक नया पद मिला अर्थात "मसीह यीशु का प्रेरित" (2 कुरि. 1:1) और वह सुसमाचार का महान प्रचारक बना। उसका जीवन पूर्ण रूप से बदल गया क्योंकि उसे नया व्यक्ति बनने के लिए मसीह के प्रेम ने विवश किया था। अब वह अपने लिए नहीं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु दूसरों के लिए (2 कुरि. 5:14, 15; फिलि. 2:3-11)। पौलुस की तरह, हम "जयवन्त से बढ़कर" हो सकते हैं (रोमियों 8:37) तभी जब हम मसीह को अपने ऊपर विजय करने देते हैं। जब परमेश्वर यीशु मसीह के सुसमाचार के द्वारा स्वयं को हम पर प्रकट करता है। उसकी हमारे लिए इच्छा है कि हम एक नया नाम लें जो चरित्र और जीवन में परिवर्तन को लाता है (2 कुरि. 3:17, 18; इफि. 4:22-24)। पहली शताब्दी में, जिनको "मसीही" कहा गया था उनसे मसीह की तरह होने आशा की जाती थी (1 पतरस 4:14-16); और वही चुनौती आज भी हमारे सामने है।

समाप्ति नोट्स

[1]पहले के वक्तव्य "यह ... परमेश्वर का घर है" से तुलना करें (28:17)। [2]आमतौर पर यह माना जाता है कि मनहैम गिलाद (31:25) में याबोक नदी के निकट (32:22) स्थित है। यह बाद में गाद के वंश को मिला (यहोशू 13:26; 21:38)। संयुक्त इस्राएल राष्ट्र के समय कई महत्वपूर्ण गतिविधियाँ वहाँ हुई (2 शमूएल 2:8, 9; 17:24, 27; 18:33; 19:32; 1 राजा 4:14)। [3]पूर्ववर्ती समय में जब परमेश्वर, बेतेल में याकूब पर प्रकट हुआ था तो उसने उसे यह आश्वासन दिया था कि वह उसके साथ रहेगा और वह उसे उत्तराधिकार में मिलने वाले देश में लौटा ले आएगा (28:15)। [4]एडविन यामूची, "שָׁמַר," *TWOT* में, 1:303. [5]अब्राहम के पास यर्दन घाटी में मेसोपुतामिया आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए केवल 318 लड़ाकू थे (14:14)। [6]ब्रूस के. वाटके के अनुसार, बेतेल में याकूब का प्रतिज्ञा (28:20-22) "प्रार्थना के रूप में प्रतिपादित नहीं है" (ब्रूस के. वाटके, *जेनेसिसः ए कमेंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशर्स, 2001], 443, नोट 199)। [7]वास्तविक रूप से अब्राहम, याकूब का दादा था परंतु बाइबल में जनक को "पिता" करके संबोधित किया गया है (देखें मत्ती 3:9; लूका 16:24; यूहन्ना 8:53, 56)। [8]याकूब के उपहार में जानवरों की संख्या "उसके बाद के तिथियों में भी विजेता राजाओं को कर देने के लिए कई नगरों के जानवरों को मिलाकर देने से भी बढ़कर है" (जॉन एच. वाल्टन, "जेनेसिस," *जॉडरवैन*

इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राऊंडस् कमेंट्री, वोल्यूम 1, *जेनेसिस, लेविटीकस, नंबर्स, ड्यूट्रोनोमी,* संपादक जॉन एच. वाल्टन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 2009], 115)। [9]आर. लैयर्ड हैरिस, "כָּפַר," *TWOT* में, 1:452. [10]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्शीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफोर्डः क्लैरडन प्रेस, 1962), 496.

[11]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस,* द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 357-58. [12]वाटके, 445. [13]रोनाल्ड यंगब्लड ने 32:22, 24 में शब्दों के हेर फेर की ओर ईशारा कियाः "परमेश्वर ने याकूब *(याकोव)* के साथ यब्बोक *(यब्बोक)* के किनारे मल्लयुद्ध *(येआबेक)* किया" (रोनाल्ड यंगब्लड, नोट्स ओन जेनेसिस, *NIV स्टडी बाइबल,* संपादक केन्नेथ बारकर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1985, 56)। [14]ई. ए. स्पैजर, *जेनेसिस,* दि एंकर बाइबल, खण्ड 1 (गार्डन सीटी, न्यू यॉर्कः डबलडे & कम्पनी, 1964), 255. इस शब्द के दो और परिभाषा, "एल [परमेश्वर] शासन करेगा (या संघर्ष करेगा)" और "एल [परमेश्वर] शासन करे," विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक आफ जेनेसिसः चैप्टर्स 18-50,* द न्यू इंटरनैशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1995), 334, में दिया गया है। [15]हैमिल्टन, 336. [16]केन्नेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26,* द न्यू अमेरिकन कमेंट्री, वोल्यूम 1B (नैशविल्लाः ब्राडमैन & हॉलमैन पब्लिशर्स, 2005), 560. [17]*पूर्वोक्त,* 561. [18]ड्ब्ल्यू. जे. हूस्टन, "फूड्स, क्लीन एण्ड अनक्लीन," में *डिक्शनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेंटः पेंटाट्यूक,* संपादक टी. डेस्मंड एलेक्जेंडर एण्ड डेविड ड्ब्ल्यू. बेकर (डॉनर्स ग्रूव, इलीनोइसः इन्टरवारसीटी प्रेस, 2003), 332. [19]जोसेफस ने इस प्रथा को ईस्वी सन् प्रथम सदी में भी देखा था (*एंटीक्वीटीज* 1.20.2) और मिस्नाह में इससे संबंधित कई नियम हैं (*हूलीन* 7.1-6), यहाँ तक कि आज भी कट्टर यहूदी जंघायु खाने से परहेज़ करते हैं। [20]वास्तव में, 35:27-29 के अनुसार इसहाक की इसके कुछ समय के बाद मृत्यु हुई।